लौहपुरुष सरदार पटेल : एकता के शिल्पी

डॉ.राजेश सिंह के.सुपहिया

आसिस्टन्ट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

आर्ट्स कॉमर्स सायंस कॉलेज, बोरसद

भारत के राजनीतिक क्षितिज पर कुछ ही व्यक्तित्व ऐसे हुए हैं जिन्होंने देश के इतिहास और भूगोल को एक साथ परिभाषित किया हो । सरदार वल्लभभाई पटेल ऐसे ही एक अद्‌वितीय राष्ट्र निर्माता थे। उन्हें न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रिम पंक्ति के नेता के रूप में याद किया जाता है, बल्कि 'उन्हें 'भारत का बिस्मार्क' और 'लोह पुरुष' (Iron Man) की उपाधियों से भी विभूषित किया जाता है। सरदार पटेल का सबसे बड़ा योगदान, स्वतंत्रता के बाद लगभग 562 छोटी-बड़ी रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करना था, जिसने उन्हें सही मायने में आधुनिक भारत की 'एकता का शिल्पी' बना दिया। जनता की उन्नति उसके साहस उसके चरित्र और उसकी बलिदान देने की शक्ति पर निर्भर करती है ।'[1]

लौहपुरुष' सरदार पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में हुआ। वे खेड़ा जिले के करमसद में रहने वाले झवेरभाई और लाडबाई पटेल की चौथी संतान थे। 1897 में 22 साल की उम्र में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वल्लभ भाई की शादी झवेरबा से हुई। सरदार पटेल जब सिर्फ 33 साल के थे, तब उनकी पत्नी का निधन हो गया । सरदार पटेल को अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने में काफी समय लगा। उन्होंने 22 साल की उम्र में 10वीं की परीक्षा पास की । 'लेवा जाति की पाटीदार शाखा से सबंधित होने के कारण सरदार वल्लभभाई के पूर्वज 'पटेल' कहलाए ।'[2] सरदार पटेल का सपना वकील बनने का था और अपने इस सपने को पूरा करने के लिए उन्हें इंग्लैंड जाना था, लेकिन उनके पास इतने भी आर्थिक साधन नहीं थे कि वे एक भारतीय महाविद्‌यालय में प्रवेश ले सकें। उन दिनों एक उम्मीदवार व्यक्तिगत रूप से पढ़ाई कर वकालत की परीक्षा में बैठ सकते थे। ऐसे में सरदार

पटेल ने अपने एक परिचित वकील से पुस्तकें उधार लीं और घर पर पढ़ाई शुरू कर दी। अपनी उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने 36 वर्ष की आयु में इंग्लैंड जाने का महत्वाकांक्षी निर्णय लिया। अपनी बैरिस्टर की पढ़ाई को उन्होंने केवल 30 महीनों में पूरा किया और भारत लौटकर अहमदाबाद में एक सफल और समृद्ध वकील के रूप में स्थापित हुए। उनकी जीवनशैली में एक विशिष्ट दृढ़ता थी, जो उनके भावी राजनीतिक करियर का आधार बनी।

सरदार पटेल के जीवन में निर्णायक मोड़ तब आया जब वे महात्मा गांधी के संपर्क में आए। गांधीजी के विचारों और अहिंसक संघर्ष की अवधारणा ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने अपनी सफल वकालत को छोड़कर देश की सेवा का व्रत लिया। खेड़ा सत्याग्रह 1918 में हुआ था ।गांधीजी के मार्गदर्शन में, पटेल ने गुजरात के खेड़ा में अत्यधिक करों के खिलाफ किसानों के संघर्ष का नेतृत्व किया। उनकी सांगठनिक क्षमता और निर्णायक नेतृत्व ने ब्रिटिश सरकार को किसानों की मांगें मानने पर मजबूर कर दिया।1923 का समय था गुजरात के खेडा जिल्ले (वर्तमान आणंद जिला) का बोरसद और उसके आसपास का इलाका एक बड़ी समस्या से जूझ रहा था । इस क्षेत्र में बाहरवटीया (बाहर से आए लुटेरों) का आंतक बढ़ गया था । लेकिन अन्याय तो तब हुआ जब ब्रिटिश सरकार ने एक आदेश जारी किया कि डाकुओं से सुरक्षा के लिए एक अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया जाएगा और इस बल का सारा खर्च स्थानीय लोगो से एक दंडात्मक कर के रूप में वसूला जाएगा । इस कर को पिलफिल्ड (pill feel) कहा गया और यह प्रति व्यक्ति ढाई रूपये तय किया गया । गरीब किसानों के लिए यह रकम वहुत बड़ी थी और इससे भी बड़ा अपमान यह था कि उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए नहीं बल्कि डाकुओं के आंतक के लिए दण्डित किया जा रहा था । इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए सरदार पटेल आगे आये । उन्होंने किसानों से कहा कि 'यह पुलिस का बंदोबस्त तुम्हें बचाने के लिए नहीं बल्कि तुम्हारी जेब से पैसा निकलने के लिए है । उन्होंने लोगो को संगठित किया और स्पष्ट निर्देश दिया कि एक भी पैसा नहीं देना है ।'[3] सरदार की रणनीति साफ़ थी अहिंसक सविनय अवज्ञा । गाँव-गाँव में सभाएं हुई ,लोको को यह विश्वास

दिलाया गया कि यदि वे एकजुट होकर खड़े रहे तो सरकार को झुकना पड़ेगा । सरदारजी ने अपनी संगठनात्मक क्षमता का उपयोग करते हुए लोगो में भय के स्थान पर साहस भर दिया । सरदार पटेलजी के अडिग नेतृत्व और बोरसद के लोगो की एकजुटता और धीरज ने कमाल कर दिखाया । इस प्रकार जनवरी 1924 में ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा और उसने यह अन्यायपूर्ण पिलफिल्ड (दंड शुल्क) वापस ले लिया । बोरसद सत्याग्रह की जीत ने पुरे देश को यह सन्देश दिया कि जब लोग अपने अधिकारों के लिए एकजुट होते है और एक मजबूत नेता का मार्गदर्शन मानते है तो वे सबसे शक्तिशाली सरकार को भी पराजित कर सकते है । यह जीत बारडोली सत्याग्रह के लिए एक आधार बनी ।

बारडोली सत्याग्रह 1928 में गुजरात के बारडोली तालुका में हुआ था । यह आंदोलन उनके नेतृत्व क्षमता का चरमोत्कर्ष था। इसका भी नेतृत्व सरदार पटेलजी ने संभाला था ,जो ब्रिटिश सरकार द्वारा बढाई गयी लगान के खिलाफ एक प्रमुख किसान आन्दोलन था । बारडोली के किसानों पर बढ़ाए गए लगान के खिलाफ उन्होंने एक सशक्त और अनुशासित आंदोलन खड़ा किया। इस संघर्ष की सफलता के बाद ही, बारडोली की महिलाओं ने उन्हें प्यार और सम्मान से 'सरदार' (नेता या प्रमुख) की उपाधि मिली। यह उपाधि उनके नाम का पर्याय बन गई।

सरदार पटेल ने असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह (दांडी मार्च) और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे सभी प्रमुख आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। वह कांग्रेस संगठन के भीतर एक मजबूत स्तम्भ थे। वह जानते थे कि स्वतंत्रता केवल माँगने से नहीं, बल्कि संघर्ष और सशक्त संगठन से मिलेगी। उन्होंने विभिन्न मौकों पर जेल की यातनाएँ सहीं, लेकिन उनका संकल्प कभी कमजोर नहीं पड़ा।

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ, लेकिन यह स्वतंत्रता अपने साथ विभाजन की विभीषिका, सांप्रदायिक हिंसा और सबसे बड़ी समस्या–रियासतों के एकीकरण की चुनौती लेकर आई। वल्लभभाई पटेल को नवगठित सरकार में उप-प्रधानमंत्री और गृह मंत्री का कार्यभार सौंपा

गया। उस समय भारत का मानचित्र खंडित था। ब्रिटिश भारत के अलावा, यहाँ 562 से अधिक देशी रियासतें थीं, जिनके शासकों को स्वतंत्रता दी गई थी कि वे भारत या पाकिस्तान में शामिल हों, या स्वतंत्र रहें। यदि ये रियासतें स्वतंत्र रहतीं, तो भारत कई छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित हो जाता और उसकी संप्रभुता खतरे में पड़ जाती। सरदार पटेल ने रियासतों के एकीकरण की असंभव लगने वाली चुनौती को स्वीकार किया। यह कार्य उनकी कूटनीति, दृढ़ इच्छाशक्ति और व्यावहारिक दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

29 मार्च 1931 में कराची किये गए कोंग्रेस अधिवेशन में गांधी-इरविन समझोते यानी दिल्ली समझोते को स्वीकृति प्रदान की गयी थी । इसकी अध्यक्षता सरदार वल्लभभाई पटेल ने की थी । इसमें पूर्ण स्वराज्य के लक्ष्य को फिर से दोहराया गया तथा भगतसिंह,राजगुरु,और सुखदेव की वीरता और बलिदान की प्रशंशा की गई । यधपि कोग्रेस ने किसी भी प्रकार की राजनितिक हिंसा का समर्थन न करने की अपनी नीति भी दोहराई ।

पटेल ने अपनी रणनीति में 'गाजर और छड़ी' (Carrot and Stick) दोनों का उपयोग किया। दूरदर्शिता और अनुनय से उन्होंने रियासतों के शासकों को समझाया कि एक बड़े और स्थिर राष्ट्र का हिस्सा बनना उनके और उनकी प्रजा दोनों के दीर्घकालिक हित में है। उन्होंने 'Instrument of Accession' पर हस्ताक्षर करने के लिए प्रेरित किया, जिसके तहत शासक केवल रक्षा, विदेश नीति और संचार जैसे प्रमुख विषयों को केंद्र सरकार को सौंप रहे थे। प्रीवी पर्स (Privy Purse) उन्होंने शासकों को एक निश्चित वार्षिक भत्ता (प्रीवी पर्स) और कुछ विशेषाधिकार देने का वादा किया, जिससे उन्हें सत्ता छोड़ने का दुख कम हो सके।दृढ़ता और बल का प्रयोग जहाँ शासकों ने हठधर्मिता दिखाई या विभाजनकारी शक्तियों के प्रभाव में काम किया, वहाँ पटेल ने बिना किसी हिचकिचाहट के बल प्रयोग किया।

जूनागढ़ (गुजरात) यहाँ का नवाब पाकिस्तान में शामिल होना चाहता था, जबकि अधिकांश जनता भारत के पक्ष में थी। पटेल ने जनमत संग्रह (Plebiscite) का दबाव बनाया, और भारत सरकार ने हस्तक्षेप किया। अंततः जूनागढ़ भारत का अभिन्न अंग बना।हैदराबाद

निज़ाम उस्मान अली खान ने स्वतंत्र रहने की घोषणा की। हैदराबाद, भारत के हृदय में एक विदेशी द्वीप बनने की धमकी दे रहा था। निज़ाम की सेना और कट्टरपंथी 'रजाकारों' की क्रूरता बढ़ने पर, सरदार पटेल ने 'ऑपरेशन पोलो' (सितंबर 1948) के तहत भारतीय सेना को भेजने का साहसिक निर्णय लिया। इस सैन्य कार्रवाई ने कुछ ही दिनों में निज़ाम को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर कर दिया और हैदराबाद भारत में शामिल हो गया।

जम्मू और कश्मीर यद्यपि कश्मीर का मुद्दा प्रधानमंत्री नेहरू के अधीन था, पटेल ने इस क्षेत्र की संवेदनशीलता को समझा और अक्टूबर 1947 में पाकिस्तानी घुसपैठ के बाद महाराजा हरिसिंह द्वारा विलय के दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप, भारतीय उपमहाद्वीप का वह नक्शा अस्तित्व में आया जिसे हम आज देखते हैं–एक एकीकृत और संप्रभु राष्ट्र। इस असाधारण उपलब्धि के कारण ही पटेल को 'लोह पुरुष' कहा जाता है, जिन्होंने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और कठोर निर्णय लेने की क्षमता से भारत को लोहे की तरह एकजुट किया।

SHABDBRAHM

स्वतंत्र भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री ,गृह मंत्री और सुचना एवं प्रसारण मंत्री नियुक्त हुए । यधपि लगभग सभी प्रांतीय कोंग्रेस समितियां पटेल को प्रधानमंत्री बनाने के पक्ष में थे और वास्विकता में सरदार वल्लभभाई पटेल ही प्रधानमंत्री पद के सच्चे हक़दार व् उपयुक्त उम्मीदवार थे क्योकि सरदार पटेल महात्मा गांधीजी के बाद देश के सबसे लोकप्रिय व्यक्ति होने के साथ-साथ देशी रियासतों के एकीकरण का जो सबसे कठिन कार्य लगता था , उसे आसानी से कर के दिखा दिया । सरदार पटेल पंडित नेहरु से हर तरह से बहुत आगे थे परन्तु महात्मा गांधीजी पंडित जवाहर लाल नेहरू को प्रधानमंत्री बनाना चाहते थे ।,इसलिए सरदार वल्लभ भाई पटेल ने गांधीजी की इच्छा का आदर करते हुए प्रधानमंत्री पद की दौड़ से अपने को दूर रखा और इसके लिए नेहरु का समर्थन किया । उन्हें उप-प्रधानमंत्री और गृह-मंत्री का कार्य सौपा गया किन्तु इसके बाद भी नेहरू और पटेल के संबंध तनावपूर्ण ही रहे । इसके चलते कई अवसरों पर दोनों ने ही अपने पद का त्याग करने की धमकी दे दी थी । गृह मंत्री

के रूप में उनकी पहली प्राथमिकता देशी रियासतों को भारत में मिलाना था । इसको उन्होंने बिना खून बहाये संपादित कर दिखाया ।

सरदार पटेल केवल एकीकरण तक ही सीमित नहीं रहे; उन्होंने राष्ट्र के प्रशासनिक ढाँचे को भी मजबूत किया।सिविल सेवाओं का संरक्षण: उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) और भारतीय पुलिस सेवा (IPS) को 'स्टील फ्रेम ऑफ इंडिया' (भारत का इस्पात ढाँचा) कहा। उन्होंने सिविल सेवकों को राजनीतिक हस्तक्षेप से बचाकर, देश के प्रशासन को निष्पक्ष और कार्यकुशल बनाने पर ज़ोर दिया। आज भी, भारत की सिविल सेवाएँ उन्हीं के द्वारा रखी गई नींव पर खड़ी हैं।आर्थिक नीति में पटेल एक व्यावहारिक समाजवादी थे। वे कृषि के साथ-साथ उद्योग और व्यापार के महत्व को समझते थे। उनका मानना था कि औद्योगीकरण और राष्ट्रीय विकास तभी संभव है जब देश में मजबूत कानून व्यवस्था और आंतरिक शांति हो।

भारत के इतिहास के ताने-बाने में सरदार वल्लभभाई पटेल एक ऐसे दीप्तिमान धागे के रूप में उभरे है जो हमरे राष्ट्र के विविध धागों को एक साथ पिरोते है । एक साधारण गाँव से लेकर राजनीतिक सत्ता के पवित्र परिसर तक का उनका सफ़र ,दृढ़ संकल्प ,नेतृत्व और व्यापक हित के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की विजय का प्रतीक है । जब हम पटेल के जीवन पर नजर डालते है , तो हमें याद आता है कि अखंड भारत का स्वपन हर बलिदान के लायक है । उनकी विरासत उस राष्ट्र के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश का काम करती है जो प्रगति,न्याय और एकता के लिए निरंतर प्रयासरत है ।

15 दिसंबर 1950 को सरदार पटेल का निधन हो गया। उनके निधन से राष्ट्र ने एक असाधारण नेता खो दिया, लेकिन उनकी विरासत आज भी जीवित है। सरदार पटेल आधुनिक भारत की पहचान हैं। उन्होंने हमें सिखाया कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति, व्यावहारिकता और निस्वार्थ सेवा सबसे आवश्यक है। उनका आदर्श है कि राष्ट्र सर्वोपरि है, और इसी आदर्श ने उन्हें 'लोह पुरुष' और 'एकता के शिल्पी' के रूप में भारतीय इतिहास में अमर कर दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :

1.कपूर शुशील : लोहपुरुष सरदार वल्ल्भ पटेल प्रकाशक विधा विहार दरियागंज नई दिल्ली प्रथम संस्करण २०१३ पृ.सं.३०

2.मेहरोत्रा एन.सी.,कपूर रंजना : 'सरदार वल्लभभाई पटेल व्यक्ति एवं विचार' प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट दिल्ली, २००९, पृ.सं. ९

3. આપણા સ્વાતંત્ર્ય -સંગ્રામની કથા -રમણલાલ સોની -શારદા મુદ્રણાલય પ્રથમ આવૃત્તિ ૧૯૯૭ પૃ.સં.૧૧

SHABDBRAHM